नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

यूजीसी : सुप्रीम कोर्ट का स्वागत योग्य हस्तक्षेप

उच्च शिक्षा केवल डिग्रियों का कारखाना नहीं होती, बल्कि वह समाज की चेतना, समानता और राष्ट्रीय एकता का दर्पण भी होती है. ऐसे में यदि उच्च शिक्षण संस्थानों से जुड़े नियम ही समाज को बांटने की आशंका पैदा करने लगें, तो न्यायपालिका का हस्तक्षेप न केवल आवश्यक बल्कि अनिवार्य हो जाता है. जनवरी 2026 में यूजीसी द्वारा अधिसूचित 'उच्च शिक्षण संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने वाले नियम 2026' पर सुप्रीम कोर्ट की रोक इसी संदर्भ में एक दूरदर्शी और संतुलनकारी कदम के रूप में देखी जानी चाहिए.

इन नियमों का घोषित उद्देश्य भले ही समानता और भेदभाव की रोकथाम रहा हो, लेकिन उनकी संरचना और भाषा ने कई गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए. सबसे बड़ा विवाद 'जाति आधारित भेदभाव' की संकीर्ण परिभाषा को लेकर सामने आया. नियमों में भेदभाव को केवल अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग तक सीमित कर दिया गया, जिससे सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों और शिक्षकों को इस संरक्षण से बाहर कर दिया गया. यह दृष्टिकोण संविधान के समानता के मूल सिद्धांत की भावना के विपरीत प्रतीत होता है, क्योंकि कानून की नजर में भेदभाव-भेदभाव होता है, उसका शिकार कौन है, यह नहीं.

नियमों की दूसरी बड़ी कमजोरी दुरुपयोग की संभावनाओं को लेकर रही. शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया तो विस्तृत थी, लेकिन झूठी या दुर्भावनापूर्ण शिकायतों के विरुद्ध कोई स्पष्ट दंडात्मक प्रावधान नहीं था. इससे आशंका जताई गई कि नियमों का इस्तेमाल किसी को डराने, बदनाम करने या संस्थागत दबाव बनाने के औजार के रूप में किया जा सकता है. सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी कि ऐसे प्रावधानों के 'खतरनाक परिणाम' हो सकते हैं, केवल कानूनी नहीं बल्कि सामाजिक चेतावनी भी है.

सबसे अधिक चिंता पैदा करने वाला पहलू हॉस्टल और कक्षाओं में 'पृथक्करण' जैसे शब्दों का प्रयोग रहा. शिक्षा का उद्देश्य मेलजोल, संवाद और साझा अनुभवों के माध्यम से व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है. यदि नियमों की भाषा यह संकेत दे कि जाति के आधार पर अलगाव को वैध ठहराया जा सकता है, तो यह न केवल भाईचारे की भावना को चोट पहुंचाता है, बल्कि राष्ट्र की सामाजिक एकता को भी कमजोर करता है. अदालत का यह कहना कि शिक्षण संस्थानों में भारत की एकता का प्रतिबिंब दिखना चाहिए, अत्यंत सार्थक है. इन नियमों की एक और बड़ी कमी यह रही कि इन्होंने भेदभाव को केवल जाति के चश्मे से देखा. जबकि वास्तविकता यह है कि विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में क्षेत्रीय असंतुलन, भाषा आधारित तनाव, उत्तर-दक्षिण का भाव, रैगिंग और वैचारिक असहिष्णुता जैसे मुद्दे भी समान रूप से गंभीर हैं. दरअसल, केवल एक आयाम पर केंद्रित नीति समस्या का संपूर्ण समाधान नहीं कर सकती. मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की पीठ द्वारा इन नियमों को प्रथम दृष्टया अस्पष्ट, विभाजनकारी और प्रतिगामी बताना इस बात का संकेत है कि समानता की राह पर चलते हुए समाज को पीछे नहीं धकेला जा सकता. पचहत्तर वर्षों की संवैधानिक यात्रा के बाद यदि नीति निर्माण फिर से पहचान की खाइयों को गहरा करे, तो उस पर पुनर्विचार आवश्यक है.

सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियमों को स्थगित कर पुराने नियमों को लागू रखना और भाषा की समीक्षा के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने का निर्देश एक संतुलित समाधान है. यह हस्तक्षेप न तो समानता के विचार के विरुद्ध है और न ही सामाजिक न्याय के. बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि न्याय की प्रक्रिया में एकता, निष्पक्षता और विवेक बना रहे. ऐसे समय में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सुप्रीम कोर्ट का यह कदम भारतीय उच्च शिक्षा और सामाजिक समरसता, दोनों के हित में स्वागत योग्य है.

और मार्क टली जब भारत की आवाज बन गए

ऋतुपर्ण दवे

अब स्मृतियां ही शेष

मार्क टली भारत की सबसे बड़ी ताक़त उसकी स्थिरता को जबकि सबसे बड़ी खूबी विभिन्न धर्मावलंबियों की एकजुटता को मानते रहे. वो भारत को वो भूमि मानते जहां पहाड़, रेगिस्तान, समुंदर के किनारे हैं. भारत में इंगलैंड जैसी मॉडर्न पुलिसिंग के पक्षधर मार्क थानेदार प्रणाली से नाखुश रहते. वो भारत में अंग्रेजों के जमाने से जारी बाबूगिरी को नाकाम मानते रहे. गांवों तक से उन्हें शिकायत मिलती कि बाबू लोग सुनवाई नहीं करते क्योंकि उनकी अब भी लोगों के ऊपर राज करने की सोच नहीं बदली है. उनकी संवेदनशीलता की यही बानगी उन्हें पत्रकार बिरादरी में सबसे अलग जगह दिलाती है. मार्क टली हों या बीबीसी लंदन ये जुमला आज भी विश्वनीयता का पर्याय बना हुआ है. 2002 में नाइटहुड से सम्मानित और 2005 में पद्म भूषण से नवाजे गए सर मार्क टली, प्रेस क्लब ऑफ इंडिया और इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का एक जाना-पहचाना चेहरा थे.

एक जांबाज पत्रकार, वो शख्सियत जिसकी विश्वसनीयता ने भारत में विदेशी ब्रॉडकास्टर बीबीसी को वो पहचान दिलाई जो दुनिया में शायद ही किसी को मिली हो. यारों का यार होकर भी रिपोर्टिंग करते वक्त उसूलों से समझौता न करने वाली रिपोर्ट के धनी मार्क टली भारत में ही जन्मे भारत की मिट्टी में आखिरी सांस भी ली. फक गोरा होकर भी भारतीय परिवेश में रंगे टली जब फर्राटेदार कवरेज करते तो बरबस ही मुंह से निकलता ये गोरा कोई कैसा लंदन का. जीवन में जो सादगी, विनम्रता सहजता, संतुलन और सरलता उनमें बेमिशाल थी. दिखावे और ठाठ-बाट से दूर रहने वाले मार्क का जन्म 24 अक्टूबर 1935, टालीगंज, कोलकाता में हुआ और आखिरी सांस देश की राजधानी नई दिल्ली में 25 जनवरी 2026 को ली.

भारत को लेकर विदेशियों की राय भी प्राय: अलग-अलग रहती है. पत्रकार बिरादरी तो और भी अलग नजरिए से देखती है. भारत को कभी आध्यात्म तो कभी ऐसा देश समझते हैं जहां काफी कुछ ठीक नहीं लगता. लेकिन मार्क का नजरिया भारत के प्रति हमेशा से अलग रहा. उन्होंने न भारत को पर्यटन स्थल समझा और न ही विदेशियों की भांति उपनिवेशवादी मानसिकता से देखा. वो तो एक चलता, फिरता, हाड़मांस का पुतला बनकर भारत में रहे, जो दिखा वही लिखा और कहा. इसी विशेषता ने भारत में इतना भरोसेमंद और लोकप्रिय बना दिया कि एक समय आया और अभी भी है कि कहीं भीतर या मोहल्ले की गुप्त बातें भी साझा होती हैं तो कहा जाता कि बीबीसी लंदन की पक्की खबर है, गलत कैसे होगी! इतनी विश्वनीयता वह भी उस दौर में जब भारतीय मीडिया पूरी तरह से सरकार के नियंत्रण में थी के बहुत कुछ मायने हैं. निश्चित रूप से मार्क टली के निधन से भारत ने अपना एक सच्चा दोस्त खो दिया है.

मार्क टली के पिता एक रईस अंग्रेज थे जो व्यापारिक एजेंसी, गिलैंडर्स एंड अर्बुथनोट में वरिष्ठ भागीदार थे. ये तबकी बहुत बड़ी कंपनी थी जो कोयला खदानों, रेलवे और बीमा कंपनी का काम करती थी. उनकी मां का जन्म बांग्लादेश में हुआ था. बचपन के दस साल भारत में बिताया लेकिन भारतीयों से मिलने-जुलने की उन्हें आजादी नहीं थी. स्कूल शिक्षा खातिर उन्हें इंग्लैंड जाना पड़ा जहां ट्वाईफोर्ड स्कूल, मार्लबोरो कॉलेज और ट्रिनिटी हॉल तथा कैम्ब्रिज में पढ़े. धर्मशास्त्र का अध्ययन किया. विचार पादरी बनने का था लेकिन दो सत्रों के बाद ही इसे बदला और 1964 में बीबीसी में शामिल हुए.

1960 के दशक में आकाशवाणी का बोलबाला था. मेल्विल डी मेलो जैसे बड़े नाम रेडियो पर राज करते थे. आकाशवाणी और रेडियो सीलोन का दबदबा था. ऐसे में रेडियो प्रसारण में जगह बनाना आसान नहीं था. लेकिन मार्क टली की निष्ठा, लगन थी जो कर दिखाया. तमाम कठिनाइयों, सरकारी दबाव के बावजूद 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, 1971 का मुक्ति युद्ध और बांग्लादेश का जन्म, 1975 का आपातकाल, 1980 के दशक का पंजाब विद्रोह और 5 जून, 1984 का ऑपरेशन ब्लू स्टार कवर कर न केवल वो खास मुकाम बनाया बल्कि उन्हें इतिहास का प्रत्यक्ष गवाह बनने का मौका भी मिला. अन्य चर्चित कवरेजों में इंदिरा गांधी की हत्या, सिख विरोधी दंगे, राजीव गाँधी की हत्या एवं बाबरी मस्जिद विध्वंस भी रहे. आपातकाल में निष्पक्षता के चलते इन्दिरा गाँधी उन्हें गिरफ्तार करना चाहती थीं तो कुछ दिनों के लिए लंदन चले गए. 1975 के आपातकाल पर उनकी पुस्तक 'इंडियाज अनएंडिंग जर्नी' तो 1978 के प्रयागराज कुंभ का व्यापक कवरेज और उनकी पुस्तक 'नो फुल स्टॉप्स इन इंडिया' पर इस सबसे बड़े मेले का पूरा वृतांत काफी चर्चाओं में रहा. मार्क टली को दक्षिण एशिया की पूरी जानकारी और समझ थी.

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश कांग्रेस कार्यालय की प्रासंगिकता

दिलीप झा

मध्यप्रदेश से कांग्रेस राज्यसभा के लिए एक उम्मीदवार किसे बना रही है, इस पर असमंजस बरकरार है. पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने तो पहले ही घोषणा कर दी है कि अब वे राज्यसभा से संसद नहीं बनेंगे. वहीं, पूर्व सीएम कमलनाथ की बढ़ती उम्र भी कांग्रेस हाईकमान के संज्ञान में है. इसलिए हो सकता है सोनिया गांधी के करीबी कमलनाथ के बेटे नकुल नाथ पर भी दांव लगा सकती है. ऐसे में सवाल उठता है कि कांग्रेस किस पर दांव लगाने जा रही है. कांग्रेस के सूत्रों का कहना है हारे को हरिनाम जप करने का अवसर देकर कांग्रेस हाईकमान प्रदेश में कांग्रेस को मजबूत नहीं कर पाएगा. प्रदेश के वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं की दिल की आवाज सुनकर कांग्रेस हाईकमान को राज्यसभा के लिए अरुण यादव को भेजना सुनिश्चित करना चाहिए क्योंकि वह कांग्रेस के दिग्गज किसान नेता पूर्व डिप्टी सुभाष यादव के बेटे हैं और उनकी भी अपने पिता की तरह किसानों पर जबरदस्त पकड़ है. कांग्रेसी बताते हैं कि अरुण यादव समावेशी नेता हैं और आज भी पूरे प्रदेश के कांग्रेस विधायकों और कार्यकर्ताओं की भावना को समझते हुए मुद्दों की राजनीति करते आए हैं. मध्य प्रदेश के प्रदेश कांग्रेस कार्यालय की प्रासंगिकता बनाए रखना क्या आवश्यक नहीं है?

देश की आजादी की प्रतीक 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' द्वारा जन सामान्य के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सरोकारों से अपनी जीवंतता और प्रतिनिधित्व बनाए रखने के लिए सभी प्रदेशों में 'प्रदेश कांग्रेस' कार्यालय संचालित हैं तथा प्रदेश कार्यालयों के द्वारा जिला, विकास खण्ड तथा नगर एवं ग्राम स्तर पर संगठन का ढांचा खड़ा कर भली-भांति कांग्रेस की गतिविधियों को संचालित कराने का कार्य कांग्रेस के मूल उद्देश्यों व अवधारणा में अंतर्निष्ठ है.

1 नवंबर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य की स्थापना से ही प्रदेश में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय संचालित है तथा अभी तक एक से एक विभूतियों द्वारा प्रदेश कांग्रेस को संचालित कर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के पद को सुशोभित करने का महती दायित्व निभाया गया है. लेकिन कुछ वर्षों से प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के संचालन में कांग्रेस के मूल कर्तव्य और दायित्व के निर्वहन में व्यक्तिगत स्वभाव एवं महत्वाकांक्षा की असीमित, संकुचित तथा संकीर्ण राजनीति बलवती हुई है. फलस्वरूप गुटीय राजनीति की जड़ें गहरी होने से सभी कांग्रेस जनों से समन्वय तथा उनके बेहतर उपयोग का निर्वात कायम हो गया है. इन हालातों में सुदृढ़, समृद्ध और सोद्देश्य कांग्रेस की अवधारणा केवल एक परिकल्पना होकर, वर्तमान में प्रदेश संगठन एवं प्रदेश कार्यालय का संचालन पूरी तरह लचर, खोखला और लुंज-पुंज स्थिति में पहुंच गया है.

वर्तमान में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा राहुल गांधी लगातार अथक प्रयासों से सभी प्रदेशों में कांग्रेस संगठन को मजबूत एवं प्रभावी बनाने का अनवरत प्रयास जारी है और इसी क्रम में जिला अध्यक्षों की नियुक्तियां सामान्य कांग्रेसजनों की राय के आधार पर की जाकर जिला कांग्रेस कार्यालयों का संचालन उत्साह से भली-भांति किया जा रहा है. ऐसी स्थिति में प्रदेश कांग्रेस की स्थिति भला 'किंकर्तव्यविमूढ़' की क्यों है ? अर्थात् असमंजस, दुविधा और हतप्रभ की स्थिति स्थाई रूप में कैसे लगातार बनी हुई है.

हमेशा पसरा रहता है सन्नाटा

प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में हमेशा सन्नाटा पसरा रहता है. कार्यालय प्रभारी महासचिव कार्यालय में कभी कभी ही रहते हैं और अध्यक्ष जी कार्यालय आते नहीं. पदाधिकारियों को उचित कार्य आबंटन एवं बैठने की व्यवस्था की नहीं गयी जिससे प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में किसी के आने और न आने का कोई तात्पर्य नहीं होने से कार्यालय के सुचारु संचालन की आवश्यकता ही समाप्त हो गई है. इस स्थिति में प्रदेश के सुधी कांग्रेस जन आखिर क्या करें, बहुत बड़ा अनुत्तरित सवाल उनके सामने स्थाई जड़ें जमाए खड़ा है. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कार्यालय नई दिल्ली को इन हालातों की जानकारी तो निश्चित ही होगी लेकिन इतने बड़े देश में कांग्रेस के संगठन के संचालन में त्वरित हस्तक्षेप क्यों नहीं संभव हो रहा है, यह कांग्रेस कार्यकर्ताओं को और निराशा के गर्त में ले जा रहा है. सूत्र बताते हैं कि काफी विचार मंथन के बाद एक शून्य की स्थिति से कांग्रेस को बाहर निकालने के लिए कुछ कांग्रेसी उपाय भी बता रहे हैं. वो कहते हैं कि उपाय यह हो सकता है कि उक्त विद्यमान समस्या से चिंतित सुधी कांग्रेस जन अपनी चुप्पी तोड़ें और स्थानीय स्तर पर कुछ प्रभावी पहल करें ताकि मध्य प्रदेश में समाप्त हो रही कांग्रेस में पुनर्जीवन की स्थिति लौट आए और वह डटकर सत्ता दल से मुकाबला करने में न केवल सक्षम हो सकें, अपितु आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की सरकार बनाने हेतु दृढ़निश्चयी हो.

ई-वाहनों में आवाज का अलग सिस्टम

ई-वाहनों में आवाज नहीं होने की वजह से पैदल चलने वालों, साइकिल सवारों तथा अन्य वाहन चालकों को पता ही नहीं चल पाता कि पीछे या बाजू से कोई ई-व्हीकल आ रही है. इससे दुर्घटना का अंदेशा बना रहता है. ऐसे वाहन रिवर्स लेते समय भी आवाज नहीं होती. शहरी क्षेत्रों में गाड़ियों की तादाद ज्यादा होती है इसलिए सड़क पर उनके बीच अंतर कम रहता है. इन बातों को देखते हुए ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एआरएआई) ने इलेट्रिक चौपहिया वाहनों में एकास्टिक व्हीकल अलर्टिंग सिस्टम (एवीएएस) आगामी 1 अक्टूबर से लगाना अनिवार्य कर दिया है. इसलिए वाहन निर्माता कंपनियों को नए वाहनों में बिक्री के पूर्व यह सिस्टम लगाना होगा. इसमें ई-कार, ई-बस तथा बैटरी चालित मालवाहनों का समावेश होगा. जो ई-वाहन अभी सड़कों पर दौड़ रहे हैं उनमें भी यह सिस्टम लगाना बंधनकारक होगा. यह सिस्टम अमेरिका, यूरोप तथा जापान के ई-वाहनों में है. अब भारत भी इस दिशा में कदम उठा रहा है. ई-वाहनों में लगाया गया यह सिस्टम पेट्रोल-डीजल वाली गाड़ियों के समान आवाज करता है.

यूरोप में वाहनों की गति 20 किलोमीटर प्रतिघंटा रहने से यह सिस्टम न्यूनतम 56 से 75 डेसिबल की आवाज करता है, जो सहज सुनाई देती है. एक समान स्तर की ध्वनि करने का नियम लागू किया गया है. एआरएआई के संचालक डॉ. रेजी मथाई के अनुसार इलेट्रिक टू-व्हीलर व श्री-व्हीलर में भी ऐसा ध्वनि सिस्टम लगाने का प्रस्ताव है जिस पर चर्चा जारी है. जिन लोगों ने पेट्रोल-डीजल चालित वाहन छोड़कर पर्यावरण के लिए अनुकूल ई-वाहन खरीदे, उन्हें परिवर्तन नजर आया कि इनसे धुएंवाला प्रदूषण नहीं होता, लेकिन साथ ही ये गाड़?यां बगैर आवाज किए चलती हैं. बगल से गुजर जाती हैं और पता भी नहीं चलता. इससे राहगीर व अन्य वाहन चालक सतर्क नहीं हो पाते. यद्यपि इससे ध्वनि प्रदूषण नहीं होता, लेकिन फिर भी गाड़ी की न्यूनतम आवाज तो होनी ही चाहिए ताकि लोग सावधान हो सकें. इस वजह से ई-वाहनों में अलग से अलर्ट करने वाला ध्वनि सिस्टम लगाया जाएगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कैसी होगी शहर की सरकार अब नए मेयर का इंतजार

पड़ोसी ने हमसे कहा, महापालिका चुनाव के बाद अब जनता को प्रतीक्षा है कि शहर का प्रथम नागरिक या फर्स्ट सिटिजन कौन बनेगा. यह एक सम्मान का पद है जिसे लेकर उत्सुकता होना स्वाभाविक है.

हमने कहा, यह प्रथम नागरिक या द्वितीय नागरिक क्या है? सीधे-सीधे मेयर या महापौर कहिए ना. जिसमें काबिलियत होगी, उसको पार्टी के निर्देश पर इस पद के लिए चुन लिया जाएगा. लॉटरी के अनुसार महिला महापौर चुनी जाएगी. इसलिए सत्तारूढ़ दल की महिला कॉर्पोरेटरों के बीच होड़ या प्रतिस्पर्धा रहेगी. कोई चाहता है कि ताजगी वाले नए चेहरे को मौका दिया जाना चाहिए तो कोई अनुभवी महिला के पक्ष में है जिसे महापालिका में पहले पद मिल चुका हो और राजनीति के दावपेंच अच्छे से जानती हो.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, 9 वर्ष से चले आ रहे प्रशासक राज के बाद महापालिका में निर्वाचित प्रतिनिधियों को मौका मिला है कि वह ज्वलंत समस्याओं

को दूर कर ईमानदारी से अपने शहर का विकास करें. गड्ढेवाली सड़कें, बदबूदार पानी और कीचड़ से भरे अंडरब्रिज, कचरे के ढेर, बेतरतीब यातायात की समस्याएं नए महापौर के सम्मुख बड़ी चुनौतियां रहेंगी. प्रशासनिक मशीनरी से सारे काम तत्परता से कराने होंगे. मनपा स्कूलों का स्तर सुधारना होगा. शहर की शक्ल को खूबसूरत बनाना होगा. सबसे बड़ी बात यह है कि शुद्ध पेयजल की सप्लाई सुनिश्चित करनी होगी. इंदौर में दूषित पानी से दर्जनों लोगों की मौत ने देश के हर शहर के लिए खतरे की घंटी बजा दी है. स्वास्थ्य के मोर्चे पर भी सशक्त रहना होगा. पार्किंग की जगह पर लोगों ने ने दुकानें बना रखी हैं. सड़कों व फुटपाथ पर गाड़ी पार्क करने से यातायात में रुकावट आती हैं. समस्याएं अनेक हैं जिनका समाधान निकालना होगा.

हमने कहा, हमारे देश में मेयर के अधिकार सीमित होते हैं. नागपुर और न्यूयॉर्क के मेयर की तुलना मत कीजिएगा. विदेश में मेयर के अधीन पूरा शहर प्रशासन और वहां की पुलिस रहती है. वह शहर का बॉस रहता है. एक समय था जब एयरपोर्ट पर किसी विदेशी अतिथि का सर्वप्रथम स्वागत महापौर पुष्पगुच्छ देकर करता था. अब वह बात नहीं रही.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12157 - डॉ. सागर खादीवाला

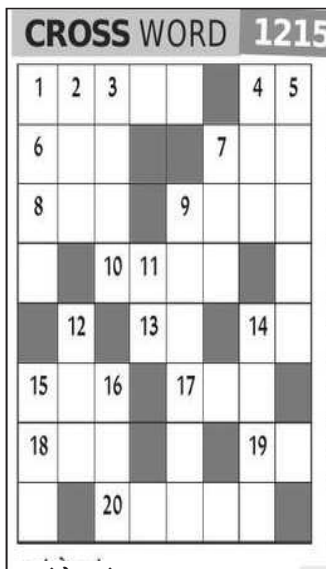

जिसके कांटेदार पत्ते होते हैं 2. मस्तिष्क, दिमाग, गिरी (उर्दू) 3. कर्कश स्वर में बोलना 4. कामयाब, सार्थक, जिसमें फल लगे हों 5. बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेन-देन बराबर जारी रहे 7. अच्छा और योग्य पुत्र 9. हवाई जहाज चलाने वाला 11. बीच की उंगली, काव्य में नायिका का एक प्रकार 12. लपसी, गाढ़ी वस्तु, थोड़ा लगाव 14. योग का एक आसन जिसके द्वारा योगाभ्यास में शीघ्र सिद्धि होती है 15. लिखने वाला, लिपिकार, ग्रंथ लिखने वाला 16. नाई की पत्नी

बाएं से दाएं
1. नाम रखने का काम या संस्कार 4. सत्य, वास्तविक 6. धातु या मिट्टी का बड़ा घड़ा, कलसा 7. उत्तम फल या परिणाम, अनार 8. प्रात:काल (उर्दू) 9. आधिक्य, बहुतायत 10. केवल नाम के लिए 13. किसी के स्वरूप का चिंतन, विषय विशेष में चित्त की एकाग्रता 14. जानकार 15. गाढ़े गीले पदार्थ की तह चढ़ाना 17. खाना, दांतों से कुचलकर खाना 18. खट्टापन, खट्टी वस्तु 19. संवत्, साल, वर्ष 20. नमक रखने का पात्र

ऊपर से नीचे
1. थूहर की जाति का एक पौधा

Solution 12156

ब	खा	न		मी	ठा		ब
या	म		या	र		फा	या
र	खा	न		जा	दू	ग	र
	ह	म	स	फ	र		
ब		क	र	र		म	नु
को	ला	ह	ल		लो	हा	
ट		रा	ता		बा	रा	त
ना	जि	म		अ	न	जा	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ के वाद विवाद से मन खिन्न रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, यात्रा में कष्ट होगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा, वर्ष के मध्य में विदेशी व्यापारियों के लिये समय लाभप्रद रहेगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में मित्रों के सहयोग से योजनाओं का समाधान होगा, राजनैतिक रूपरेखा बनेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की मित्रों के सहयोग से नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों की यात्रा में कष्ट होगा, मकर और कुंभ राशिके व्यक्तियों को यश मिलेगा,मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मेहनत अधिक करना होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को संयम सेकाम लेना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को साहस पराक्रम बढ़ेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, विनोदी, चतुर, चंचल तथा स्वविवेकी होगा, इनकी शिक्षा उत्तम रहेगी. ये शीघ्र ही किसी से भी मित्रता कर लेते हैं. माता पिता के प्रति इनका झुकाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

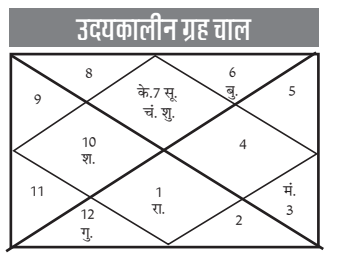

पंचांग

रा.मि. 11 संवत् 2082 माघ शुक्ल त्रयोदशी शनिवासरे प्रात: 7/13 तदुपरि चर्तुदशी तिथौ रातअंत 5/19, पुनर्वसु नक्षत्रे रात 1/11, विष्कुम्भ योगे दिन 1/10, तैतिल करणे सू.उ. 6/34, सू.अ. 5/26, चन्द्रचार मिथुन रात 7/30 से कर्क, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक-5,7,1.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल त्रयोदशी/चतुर्दशी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, जौ, गेहूं, चना, रूई कपास, चांदी, सोना के भाव में मंदी होगी. जीरा, धनियां के भाव पूर्ववत् रहेंगे. वायदा विचारा आज 11 बजकर 10 मिनिट से 20 मिनिट रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा.

मेष- अधिकारियों से काम के संबंध में उचित आश्वासन मिलेगा, शीघ्रता में कोई निर्णय न लें. नवीन निर्माण कार्यों में उन्नति होगी, संयम से कार्य करें.

वृषभ- आप दूसरों के सहयोग के लिये हमेशा तैयार रहेंगे, साहस, पराक्रम एवं कामकाज के प्रति उत्साह रहेगा. सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी.

मिथुन- प्रस्तावित योजनाएं बाधित हो सकती है, सुनी बातों पर कोई निर्णय न लें. मित्रों एवं कुटुम्बियों के सहयोग से आर्थिक समस्या दूर होगी.

कर्क- नए संपर्कों में सावधानी बरतें, लोग विश्वास में लेकर धोखा दे सकते हैं. मांगलिक कार्यों पर खर्च होगा, मनोरंजन, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

सिंह- घरेलू उलझनें परेशान करेंगी, नकारात्मक सोच से बना बनाया काम बिगड़ सकता है. विशेष श्रम एवं प्रयास करने से सफलता प्राप्त होगी. संयम रखें.

कन्या- आप रिश्तों को सहज रखने की कोशिश करेंगे, जिसका कुछ लोग अनुचित लाभ उठाने का प्रयास करेंगे. सोचे हुये कार्यों में सफलता प्रापत होगी.

तुला- जीवनसाथी के साथ मतभेद रह सकते हैं, प्रापर्टी संबंधी विवाद के समाधान की संभावना है. आजीविका के प्रयासों में उन्नति होगी.

वृश्चिक- पारिवारिक अपेक्षाओं को पूरा करने में नाकाम रहेंगे, जिससे परिजन नाराज हो सकते हैं. मित्रता आपके लिये हितकर रहेगी, यात्रा में यथेष्ठ सावधानी रखें.

धनु- कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित सफलता के आसार हैं, हाथ में लिया गया काम पूरा होगा. खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें, उदर विकार से कष्ट हो सकता है.

मकर- सामाजिक कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति नया उत्साह भर देगी, नये की शुरूआत हो सकती है, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

कुंभ- बेहतर भविष्य के लिये आपको कुछ कठोर फैसले लेने पड़ सकते हैं, स्वास्थ्य का ध्यान रखें. अतिथि वृश्चिकमन होगा, लाभ तथा यश प्राप्त होगा.

मीन- खानपान में लापरवाही के चलते स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, नौकरी में तरक्की का योग है. संतान कार्यों में तथा लेखन सृजन के कार्यों में सफलता मिलेगी.

SUDOKU 7289

6	3	7		1	5	4		9
	8						2	
		1		4	8			6
	6			9	7	1		
7	2						5	3
		5	6	3			9	
5			8	2		3		
	4						7	
1		3	7	5		2	6	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7288

5	9	4	1	7	2	6	3	8
6	8	1	4	3	5	2	7	9
2	3	7	8	9	6	1	4	5
9	2	3	7	5	1	4	8	6
4	7	6	9	2	8	5	1	3
1	5	8	3	6	4	9	2	7
8	6	2	5	4	3	7	9	1
7	1	5	2	8	9	3	6	4
3	4	9	6	1	7	8	5	2